

ग्रामीण भारत के उत्सव
पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा

डॉ. मधुबंती दत्ता

उत्सव पूरे भारत में पर्यटन, रोज़गार और स्थानीय आर्थिक विकास को गति देते हैं। पारम्परिक शिल्प, स्थानीय व्यंजन और सांस्कृतिक विरासत को सामने लाकर ये उत्सव कारीगरों, किसानों, महिला स्वयं सहायता समूहों और ग्रामीण उद्यमियों के लिए आजीविका के अवसर पैदा करते हैं। ग्रामीण पर्यटन, होमस्टे और सतत अवसंरचना से जुड़ी सरकारी पहलें इसे और सुदृढ़ करती हैं। सामुदायिक भागीदारी के साथ ये उत्सव ग्रामीण आय के स्रोतों में विविधता ला सकते हैं और विकसित भारत@2047 की परिकल्पना में योगदान दे सकते हैं।

भारत के गाँव जीवंत परम्पराओं के भंडार हैं, जिन्हें कृषि चक्र, ऋतुओं, आस्था, स्थानीय इतिहास और स्वदेशी ज्ञान ने आकार दिया है। फसल कटाई और जनजातीय उत्सवों से लेकर शिल्प मेलों, धार्मिक आयोजनों और व्यंजन महोत्सवों तक ये समारोह लंबे समय से सामाजिक और सांस्कृतिक भूमिका निभाते आ रहे हैं। अब ये ग्रामीण पर्यटन और स्थानीय आर्थिक गतिविधि के प्रेरक के रूप में भी उभर रहे हैं। ग्रामीण समुदायों के लिए पर्यटक आवास, परिवहन, भोजन, हस्तशिल्प, गाइड और प्रदर्शनों की माँग पैदा करते हैं। पर्यटकों के लिए ग्रामीण उत्सव किसी स्थान को वहाँ के लोगों, व्यंजनों, संगीत, शिल्प, अनुष्ठानों और परम्पराओं के माध्यम से अनुभव करने का अवसर देते हैं।

यह संभावना इसलिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है चूंकि पर्यटन का कृषि, हस्तशिल्प, परिवहन और सेवाओं से गहरा संबंध है, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार और आय का सृजन होता है। वर्ष 2025 में भारत में लगभग 4.29 अरब घरेलू पर्यटक यात्राएँ दर्ज की गईं, जो घरेलू यात्रा बाज़ार के विशाल आकार और ग्रामीण गंतव्यों के लिए इससे लाभ उठाने के अवसर को दर्शाती हैं।

लेखिका अर्थशास्त्री हैं और सतत विकास, जलवायु-अनुकूल विकास, सार्वजनिक नीति तथा ग्रामीण विकास के क्षेत्र में विशेषज्ञता रखती हैं।
ईमेलः duttamadhubanti89@gmail.com



कराए गए। अब त्योहारों से जुड़ी नवीनतम जानकारी 'इनक्रेडिबल इंडिया' के डिजिटल माध्यमों पर उपलब्ध हैं।

ऐसे डिजिटल मंचों का महत्त्व इसलिए है क्योंकि इनके माध्यम से लोगों को विभिन्न आयोजनों की जानकारी आसानी से मिल सकती है। ग्रामीण क्षेत्रों में कई त्योहारों में पर्यटन की अच्छी संभावनाएँ हैं, लेकिन उनकी जानकारी मुख्य रूप से संबंधित जिले या राज्य तक ही सीमित रहती है। डिजिटल कैलेंडर, पर्यटन स्थलों की जानकारी, सोशल मीडिया और यात्रा संबंधी मंचों की मदद से इन त्योहारों को देशभर के पर्यटकों तक पहुँचाया जा सकता है। इससे पर्यटक इन आयोजनों को ध्यान में रखकर अपनी यात्रा की योजना बना सकते हैं।

ग्रामीण पर्यटन के संसाधन के रूप में उत्सव

त्योहारों और पर्यटन के बीच गहरा संबंध है, जिसका आधार स्थानीय संस्कृति और परम्पराएँ हैं। ग्रामीण त्योहार किसी विशेष क्षेत्र और वहाँ के लोगों के जीवन से जुड़े होते हैं। इनके गीतों में स्थानीय इतिहास की झलक मिलती है, खानपान में आसपास उगाई जाने वाली फसलों का उपयोग होता है और हस्तशिल्प की वस्तुएँ स्थानीय सामग्री से बनाई जाती हैं। इसी तरह, त्योहारों से जुड़ी परम्पराएँ नदियों, जंगलों, पशुओं, मौसम और खेती के साथ लोगों के जुड़ाव को दर्शाती हैं। यही विशेषताएँ ग्रामीण त्योहारों को मनोरंजन के अन्य आयोजनों से अलग बनाती हैं। यहाँ आने वाले पर्यटक न केवल त्योहारों का आनंद लेते हैं, बल्कि स्थानीय संस्कृति, परम्पराओं और रहन-सहन को भी करीब से जानने का अवसर पाते हैं।

उदाहरण के लिए, कोई फसल उत्सव पर्यटकों को एक ही समय में कृषि पद्धतियों, पारम्परिक व्यंजनों, लोक प्रस्तुतियों और गाँव के शिल्प से परिचित करा सकता है। कोई जनजातीय उत्सव स्वदेशी वास्तुकला, वस्त्रों, मौखिक परम्पराओं और सामुदायिक संस्थाओं की झलक दे सकता है। एक शिल्प उत्सव पर्यटकों को सीधे बुनकरों, कुम्हारों, धातु शिल्पियों, काष्ठ कारीगरों और अन्य कारीगरों से जोड़ सकता है।

भारत के पर्यटन मंत्रालय ने भी त्योहारों को पर्यटन के महत्वपूर्ण साधन के रूप में पहचाना है। देशभर के त्योहारों और आयोजनों की जानकारी देने के लिए 'उत्सव' पोर्टल भी विकसित किया गया। इस पर मेलों, फसल कटाई से जुड़े त्योहारों, सांस्कृतिक आयोजनों और प्रदर्शनियों के माध्यम से देश के विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृति को जानने के अवसर उपलब्ध

स्थानीय अर्थव्यवस्था को मज़बूती

किसी सफल उत्सव का सबसे अधिक दिखाई देने वाला आर्थिक योगदान पर्यटकों द्वारा किया जाने वाला खर्च हो सकता है लेकिन इसका व्यापक प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि यह पैसा स्थानीय स्तर पर कितने लोगों तक पहुँचता है। ग्रामीण उत्सव में आने वाला पर्यटक स्थानीय टैक्सी किराये पर ले सकता है, होमस्टे में ठहर सकता है, स्थानीय परिवारों द्वारा तैयार भोजन खा सकता है, हथकरघा उत्पाद खरीद सकता है, स्थानीय गाइड की सेवा ले सकता है और सामुदायिक कलाकारों की प्रस्तुतियाँ देख सकता है।

होमस्टे संचालक आसपास के किसानों से सब्ज़ियाँ, दूध और अन्य ज़रूरी सामान खरीद सकते हैं। वहीं, रेस्तराँ और खाने-पीने की दुकानों पर अतिरिक्त लोगों को काम मिल सकता है। परिवहन सेवाओं और स्थानीय दुकानदारों को भी इससे लाभ होता है। इस तरह, एक पर्यटक का खर्च कई लोगों की आजीविका को सहारा देता है और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मज़बूत बनाता है।

त्योहार ऐसे समूहों के लिए भी रोज़गार और कमाई के अवसर पैदा कर सकते हैं, जिन्हें आमतौर पर पर्यटन क्षेत्र में आगे बढ़ने के सीमित अवसर मिलते हैं। महिला स्वयं सहायता समूह खाने-पीने के स्टॉल लगा सकते हैं, खानपान और आतिथ्य सेवाएँ दे सकते हैं, हस्तशिल्प तथा स्थानीय उत्पाद बेच सकते हैं और होमस्टे के संचालन में भाग ले सकते हैं। इससे महिलाओं के पारम्परिक हुनर को कमाई का साधन बनाया जा सकता है।

नगालैंड का हॉर्नबिल महोत्सव इसका एक अच्छा उदाहरण है। वर्ष 2000 में इसकी शुरुआत की परिकल्पना की गई और राज्य सरकार द्वारा आयोजित यह दस दिवसीय महोत्सव नगा संस्कृति और परम्पराओं को एक मंच पर लाता है। इसमें हस्तशिल्प, हथकरघा, स्थानीय खानपान, पारम्परिक खेलों, गाँवों के भ्रमण, संगीत और कला को शामिल किया जाता है। यह महोत्सव राज्य की पारम्परिक संस्कृति और विरासत को लोगों तक पहुँचाने का एक प्रमुख माध्यम है।

इस महोत्सव से होटल और रेस्तराँ, टैक्सी सेवाओं, टूर संचालन, गाइड, फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी, रचनात्मक कार्यों, मनोरंजन, हस्तशिल्प, बुनाई, खानपान सेवाओं और स्वयं सहायता समूहों के लिए रोज़गार तथा कमाई के अवसर पैदा होते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि एक बड़ा सांस्कृतिक आयोजन स्थानीय लोगों के लिए आजीविका के कई रास्ते खोल सकता है।

आय के ऐसे विविध साधन ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। ग्रामीण भारत में कृषि आजीविका का प्रमुख आधार बनी रहेगी, लेकिन पर्यटन से लोगों को अतिरिक्त आमदनी हो सकती है। खासकर उन क्षेत्रों में इसकी अच्छी संभावनाएँ हैं, जहाँ की संस्कृति और प्राकृतिक सुंदरता पर्यटकों को आकर्षित करती है। इससे गाँव के युवाओं को अपने ही क्षेत्र में कारोबार शुरू करने और रोज़गार पाने के अवसर मिल सकते हैं। वे आर्थिक अवसरों के लिए केवल दूसरे शहरों में जाने पर निर्भर नहीं रहेंगे।

त्योहारों और कृषि के बीच भी गहरा संबंध है। ग्रामीण क्षेत्रों में कई त्योहार बुआई, फसल कटाई और मौसम के बदलाव से जुड़े होते हैं। इन त्योहारों के दौरान पर्यटन बढ़ने से स्थानीय उपज, पारम्परिक व्यंजनों, मोटे अनाज, मसालों और अन्य क्षेत्रीय उत्पादों के लिए नए बाज़ार तैयार हो सकते हैं। पर्यटकों को खेतों का भ्रमण कराने, स्थानीय भोजन का अनुभव देने और सीधे उत्पाद बेचने जैसी गतिविधियों से जोड़ा जा सकता है। इससे किसानों और उनके परिवारों को आय के अतिरिक्त साधन मिलते हैं और उनकी आर्थिक स्थिति मज़बूत हो सकती है।

ग्रामीण कारीगरों के लिए बाज़ार का निर्माण

उत्सवों और आजीविका के बीच सबसे मज़बूत कड़ियों में से एक भारत की हस्तशिल्प और हथकरघा परम्पराओं में दिखती है। पीढ़ियों से कारीगरों ने बुनाई, कढ़ाई, पॉटरी, बाँस कार्य, धातुकार्य, चित्रकला, आभूषण, काष्ठ शिल्प, टोकरी निर्माण और अनेक अन्य परम्पराओं में अपने कौशल को सहेज कर रखा है। फिर भी उन्हें प्रायः बाज़ार तक पहुँचने में संघर्ष करना पड़ता है और कई बिचौलियों से गुज़रने पर उन्हें उत्पाद के अंतिम खुदरा मूल्य का केवल एक अंश ही मिल पाता है। त्योहारों से जुड़ा पर्यटन उत्पाद बनाने वाले कारीगरों और ग्राहकों के बीच इस दूरी को कम करने में मदद कर सकता है।

हरियाणा का **सूरजकुंड अंतरराष्ट्रीय शिल्प मेला** इन संभावनाओं का एक अच्छा उदाहरण है। हरियाणा पर्यटन विभाग के अनुसार, इस मेले का प्रमुख उद्देश्य हस्तशिल्प और हथकरघा को बढ़ावा देना तथा कारीगरों को सीधे ग्राहकों तक पहुँचने का अवसर देना है। मेले में कारीगरों और बुनकरों के लिए एक हजार से अधिक कार्यस्थल बनाए जाते हैं। यहाँ पारम्परिक कलाओं और शिल्पों को प्रदर्शित किया जाता है, जिन्हें सस्ते मशीन-निर्मित उत्पादों से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। पर्यटन मंत्रालय के 'उत्सव' पोर्टल के अनुसार, वर्ष 2025 में इस मेले में 13 लाख से अधिक पर्यटक आए। सूरजकुंड मेला दर्शाता है कि त्योहार और मेले केवल संस्कृति के प्रदर्शन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि कारीगरों की आजीविका और शिल्प-आधारित ग्रामीण उद्यमों को बढ़ावा देने वाले बाज़ार भी बन सकते हैं।

त्योहार क्षेत्रविशेष के उत्पादों और भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग वाले उत्पादों को भी बढ़ावा दे सकते हैं। इन उत्पादों को उनके मूल स्थान, पारम्परिक ज्ञान और उन्हें बनाने वाले समुदायों से जोड़कर त्योहारों के माध्यम से उनके बाज़ार में पहचान और सांस्कृतिक महत्त्व को बढ़ाया जा सकता है। पर्यटकों को यह जानने का अवसर मिलता है कि कोई वस्तु किसने बनाई, उसे कैसे तैयार किया गया और वह किस परम्परा

एक नज़र में प्रमुख उत्सव

उत्सव	राज्य	पर्यटन/आजीविका से संबंध
हॉर्नबिल उत्सव	नगालैंड	होटल, रेस्तराँ, टैक्सी, गाइड, हस्तशिल्प, बुनाई, कैटरिंग सेवाएँ और स्वयं सहायता समूह
सूरजकुंड अंतरराष्ट्रीय शिल्प मेला	हरियाणा	शिल्पकारों और बुनकरों के लिए लगभग 1,010 वर्क-हट्स; कारीगरों की उपभोक्ताओं तक सीधी पहुँच
ज़ीरो उत्सव	अरुणाचल प्रदेश	स्थानीय बाँस से बनी अवसंरचना, जनजातीय व्यंजन, हस्तशिल्प और सामुदायिक भागीदारी
रण उत्सव	गुजरात	हस्तशिल्प, लोक परम्पराओं, व्यंजनों और आसपास के गाँवों को गंतव्य पर्यटन से जोड़ना



का हिस्सा है। इस तरह, कारीगर केवल अपना उत्पाद बेचने वाला व्यक्ति नहीं रह जाता, बल्कि अपनी कला और विरासत की जानकारी देने वाला प्रतिनिधि भी बन जाता है।

डिजिटल माध्यम त्योहारों और पर्यटन से जुड़ाव को आयोजन समाप्त होने के बाद भी बनाए रख सकते हैं। क्यूआर कोड, ऑनलाइन कैटलॉग, सोशल मीडिया प्रोफाइल और डिजिटल भुगतान की सुविधा से पर्यटक घर लौटने के बाद भी कारीगरों के उत्पाद खरीद सकते हैं। इसी तरह, होमस्टे की ऑनलाइन बुकिंग, डिजिटल नक्शे और सोशल मीडिया पर प्रचार से कम प्रसिद्ध ग्रामीण पर्यटन स्थलों को भी पहचान मिल सकती है। इस तरह, कुछ दिनों तक चलने वाले किसी मेले या त्योहार में पर्यटकों की भागीदारी स्थानीय उत्पादकों, कारीगरों और पर्यटन स्थलों के साथ लंबे समय तक जुड़ाव का अवसर बन सकती है।

संस्कृति संरक्षण और आजीविका संवर्धन

ग्रामीण पर्यटन से संस्कृति के संरक्षण और आर्थिक विकास को एक-दूसरे का पूरक बनाने का अवसर मिलता है। त्योहार लोक संगीत, नृत्य, मौखिक परम्पराओं, रीति-रिवाज़ों, पारम्परिक शिल्प और खानपान से जुड़े ज्ञान जैसी अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को सँजोने में मदद करते हैं। ये परम्पराएँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ती हैं। जब पर्यटक इन परम्पराओं को महत्त्व देते हैं, तो स्थानीय समुदायों को इनके संरक्षण के लिए आर्थिक लाभ के साथ-साथ सांस्कृतिक प्रोत्साहन भी मिलता है। इससे युवा पीढ़ी भी पारम्परिक ज्ञान और कलाओं को नए नज़रिए से देखने लगती है, क्योंकि इनके माध्यम से उन्हें पहचान, बाज़ार और आय के अवसर मिल सकते हैं।

अरुणाचल प्रदेश का ज़ीरो महोत्सव इसका एक प्रमुख उदाहरण है। पर्यटन मंत्रालय के *उत्सव* पोर्टल के अनुसार, इस महोत्सव में इस्तेमाल होने वाला अधिकांश ढाँचा स्थानीय स्तर पर उपलब्ध बाँस से तैयार किया जाता है। इसमें पर्यावरण संरक्षण और स्थानीय समुदाय की भागीदारी पर विशेष ध्यान दिया जाता है। संगीत के साथ-साथ पर्यटकों को यहाँ जनजातीय खानपान, हस्तशिल्प और आसपास के गाँवों को जानने का अवसर भी मिलता है। इस तरह, यह महोत्सव अरुणाचल प्रदेश में धार्मिक यात्राओं से अलग पर्यटन को बढ़ावा देने वाला एक महत्त्वपूर्ण आयोजन बन गया है।

पश्चिमी भारत में गुजरात का रण उत्सव त्योहारों के माध्यम से किसी क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने का एक और उदाहरण है। कच्छ के विशिष्ट रण क्षेत्र की पृष्ठभूमि में आयोजित इस उत्सव में स्थानीय हस्तशिल्प, लोक परम्पराओं, खानपान और सांस्कृतिक अनुभवों के साथ वहाँ की प्राकृतिक सुंदरता भी देखने को मिलती है। इस उत्सव के कारण कच्छ आने वाले पर्यटकों को आसपास के गाँवों, स्थानीय शिल्प और वहाँ के रहन-सहन को जानने का अवसर मिलता है। इससे दूरस्थ क्षेत्र कच्छ को पर्यटन के क्षेत्र में एक अलग पहचान मिलती है और उत्सव के समाप्त होने के बाद भी स्थानीय आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है।

ग्रामीण पर्यटन के लिए नीतिगत सहयोग

इस संभावनाओं को देखते हुए, भारत सरकार ने ग्रामीण और टिकाऊ पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए व्यापक नीतिगत ढाँचा तैयार किया है।

पर्यटन मंत्रालय की 'भारत में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए राष्ट्रीय रणनीति और कार्ययोजना' में डिजिटल तकनीक,

ग्रामीण पर्यटन समूहों के विकास, प्रचार-प्रसार, प्रशिक्षण, बेहतर प्रबंधन और अच्छे कार्यों को साझा करने पर ध्यान दिया गया है। इसके बाद गाँवों में ग्रामीण पर्यटन संबंधित एक पोर्टल भी शुरू किया गया। साथ ही, पर्यटन गाँवों और ग्रामीण *होमस्टे* को पहचान और प्रोत्साहन देने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गईं।

ग्रामीण *होमस्टे* को बढ़ावा देने की राष्ट्रीय रणनीति का उद्देश्य गाँवों में ठहरने की सुविधाओं को बेहतर बनाना और पर्यटकों को स्थानीय जीवनशैली को करीब से जानने का अवसर देना है। त्योहारों से जुड़े पर्यटन में *होमस्टे* की विशेष भूमिका है। इनके माध्यम से पर्यटकों के ठहरने पर होने वाला खर्च सीधे स्थानीय परिवारों तक पहुँचता है। साथ ही, पर्यटकों को गाँवों में अधिक समय बिताने और वहाँ की संस्कृति व परम्पराओं को समझने का अवसर मिलता है।

'सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गाँव प्रतियोगिता' के तहत गाँवों का चयन केवल पर्यटकों को आकर्षित करने के आधार पर नहीं किया जाता बल्कि उनकी सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के संरक्षण, सामुदायिक मूल्यों को बढ़ावा देने तथा आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय स्थिरता के प्रयासों को भी महत्त्व दिया जाता है। इस प्रतियोगिता में विरासत, शिल्प, कृषि पर्यटन, ज़िम्मेदार पर्यटन, जीवंत गाँव, साहसिक पर्यटन, समुदाय-आधारित पर्यटन और स्वास्थ्य एवं कल्याण जैसे विभिन्न क्षेत्रों में श्रेणियाँ शामिल हैं।

ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए बुनियादी सुविधाओं का विकास भी महत्त्वपूर्ण है। **स्वदेश दर्शन 2.0 योजना** के तहत पर्यटन स्थलों पर सुविधाओं का विकास, पर्यटन सेवाओं में सुधार, कुशल मानव संसाधन तैयार करने, पर्यटन स्थलों के बेहतर प्रबंधन और प्रचार-प्रसार के माध्यम से टिकाऊ और ज़िम्मेदार पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है। फरवरी 2026 तक इस योजना के तहत 2,208.31 करोड़ रुपये की लागत वाली 53 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई। इसके अलावा, चैलेंज बेस्ड डेस्टिनेशन डेवलपमेंट (सीबीडीडी) योजना के तहत 697.94 करोड़ रुपये की 38 परियोजनाओं को भी मंजूरी दी गई।

प्रधानमंत्री जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान (PM-JUGA) के तहत जनजातीय क्षेत्रों में *होमस्टे* विकसित करने की पहल की गई है। इसका उद्देश्य ज़िम्मेदार पर्यटन को बढ़ावा देना और जनजातीय समुदायों के लिए आजीविका के नए अवसर पैदा करना है। इस पहल के तहत 1,000 *होमस्टे* विकसित करने की योजना है। इसके लिए गाँव की ज़रूरतों को पूरा करने हेतु 5 लाख रुपये तक, प्रत्येक परिवार को दो नए कमरे बनाने के लिए 5 लाख रुपये तक और मौजूदा कमरों के नवीनीकरण के लिए 3 लाख रुपये तक की सहायता का प्रावधान है।

इन पहलों से स्पष्ट है कि केवल त्योहार आयोजित करने से किसी क्षेत्र को टिकाऊ पर्यटन स्थल नहीं बनाया जा सकता। इसके लिए अच्छी परिवहन व्यवस्था, सड़कें, साफ़-सफ़ाई, पीने का पानी, ठहरने की सुविधा, कचरा प्रबंधन, इंटरनेट कनेक्टिविटी, दिशा बताने वाले संकेतक और सुरक्षा जैसी सुविधाएँ भी ज़रूरी हैं। पर्यटन के लिए विकसित की जाने वाली ये सुविधाएँ स्थानीय लोगों को भी बेहतर सेवाएँ उपलब्ध कराने और उनके जीवन-स्तर को सुधारने में मदद कर सकती हैं।



सालभर ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएँ

त्योहारों से जुड़े पर्यटन की एक सीमा यह है कि इससे आर्थिक गतिविधियाँ अक्सर कुछ ही दिनों तक सीमित रहती हैं। इसलिए त्योहारों को सालभर पर्यटन को बढ़ावा देने का माध्यम बनाना चाहिए। त्योहारों से मिलने वाली पहचान और उनके लिए विकसित की गई सुविधाओं का उपयोग करके पर्यटकों को अन्य समय में भी उस क्षेत्र की ओर आकर्षित किया जा सकता है। इससे स्थानीय लोगों के लिए रोज़गार और कमाई के अवसर लंबे समय तक बने रह सकते हैं।

गाँवों की सैर, शिल्प कार्यशालाओं, खेतों के भ्रमण, प्रकृति की सैर, स्थानीय खानपान, *होमस्टे* और ऐतिहासिक स्थलों के माध्यम से पर्यटकों को अधिक समय तक ठहरने और दोबारा आने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। साथ ही, ग्रामीण पर्यटन समूहों के तहत आसपास के उन गाँवों को जोड़ा जा सकता है, जो हस्तशिल्प, कृषि, खानपान, लोक परम्पराओं और प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाने जाते हैं। इससे पर्यटन से होने वाली आय का लाभ एक ही स्थान तक सीमित न रहकर आसपास के गाँवों तक भी पहुँचेगा और स्थानीय लोगों के लिए रोज़गार व आय के नए अवसर पैदा होंगे।

त्योहार कम प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों को भी एक अलग पहचान दिला सकते हैं। जब कोई गाँव या जिला किसी खास शिल्प, खानपान, परम्परा या सांस्कृतिक आयोजन के लिए जाना जाने लगता है, तो धीरे-धीरे वही त्योहार उस क्षेत्र की पहचान बन जाता है और उसे पर्यटन स्थल के रूप में लोकप्रिय बनाने में मदद करता है।

सतत और ज़िम्मेदार पर्यटन को बढ़ावा

त्योहारों से जुड़े पर्यटन के कारण ग्रामीण क्षेत्रों पर अतिरिक्त दबाव पड़ सकता है। इससे विशेष रूप से पानी, साफ़-सफ़ाई, यातायात, कचरा प्रबंधन और प्राकृतिक पर्यावरण पर असर पड़ता है। इसके अलावा, त्योहारों के अत्यधिक व्यावसायीकरण से स्थानीय संस्कृति और परम्पराओं की मौलिकता कम हो सकती है। ऐसी स्थिति में पर्यटन से होने वाली कमाई का बड़ा हिस्सा बाहरी कारोबारियों के पास जा सकता है, जबकि स्थानीय लोगों को अपेक्षाकृत कम लाभ मिलता है।

पर्यटन का विकास इस तरह किया जाना चाहिए कि स्थानीय समुदायों की भागीदारी बनी रहे और स्थानीय कारोबार को प्राथमिकता मिले। कारीगरों और कलाकारों को उनके काम का उचित भुगतान किया जाना चाहिए। साथ ही, कचरे और पानी का सही प्रबंधन, पर्यटकों की संख्या पर नियंत्रण तथा सांस्कृतिक और प्राकृतिक रूप से संवेदनशील स्थलों का संरक्षण भी ज़रूरी है। पर्यटकों को भी स्थानीय रीति-रिवाज़ों, पवित्र स्थलों और पर्यावरण संबंधी नियमों का सम्मान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

पर्यटन की सफलता का आकलन केवल पर्यटकों की संख्या से नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि यह भी देखा जाना चाहिए कि इससे स्थानीय लोगों को कितना लाभ हुआ। इसके लिए स्थानीय स्तर पर रोज़गार के अवसर, *होमस्टे* में ठहरने वाले पर्यटकों की संख्या, कारीगरों की बिक्री, महिलाओं और स्वयं सहायता समूहों की भागीदारी, पर्यटकों के ठहरने की अवधि, कचरा प्रबंधन और स्थानीय अर्थव्यवस्था में पर्यटन से होने वाली आय के हिस्से जैसे पहलुओं को ध्यान में रखना ज़रूरी है।

ग्रामीण विकास के इंजन के रूप में उत्सव

भारत के गाँवों को पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए बनावटी आकर्षणों की ज़रूरत नहीं है। यहाँ के त्योहार, हस्तशिल्प, खानपान, परम्पराएँ और सांस्कृतिक रीति-रिवाज़ पहले से ही पर्यटन के समृद्ध साधन हैं। ज़रूरत इस बात की है कि इस जीवंत विरासत को ज़िम्मेदार पर्यटन से जोड़ा जाए और यह सुनिश्चित किया जाए कि इससे होने वाले लाभ का सबसे बड़ा हिस्सा स्थानीय समुदायों तक पहुँचे।

अच्छी तरह आयोजित ग्रामीण त्योहारों से कारीगरों को अपने उत्पाद बेचने के लिए बाज़ार मिल सकता है, रोज़गार के अवसर पैदा हो सकते हैं और छोटे कारोबारों को बढ़ावा मिल सकता है। इससे महिलाओं और युवाओं को भी अपना काम शुरू करने के नए अवसर मिलते हैं। साथ ही, स्थानीय परम्पराओं से होने वाली आय समुदायों को अपनी संस्कृति और विरासत को सँजोने तथा उसे अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए प्रोत्साहित करती है।

हालाँकि, पर्यटन को बढ़ावा देने के नाम पर गाँवों के हर उत्सव को व्यावसायिक रूप नहीं दिया जाना चाहिए। पर्यटन का विकास स्थानीय समुदायों की भागीदारी, सांस्कृतिक पहचान के सम्मान और स्थानीय संसाधनों की उपलब्धता को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। इसकी सफलता केवल पर्यटकों की संख्या से नहीं, बल्कि इससे पैदा हुए रोज़गार, स्थानीय लोगों की आय, छोटे कारोबारों को मिले प्रोत्साहन और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण से भी आँकी जानी चाहिए। यह दृष्टिकोण विकसित भारत@2047 के लक्ष्य के अनुरूप है। इसके माध्यम से ग्रामीण आजीविका को मजबूती देने, महिलाओं और युवाओं को सशक्त बनाने, स्थानीय उद्यमों को बढ़ावा देने तथा सांस्कृतिक विरासत को सँजोने में मदद मिल सकती है।

उचित योजना, टिकाऊ बुनियादी सुविधाओं, स्थानीय लोगों की भागीदारी और सहायक नीतियों के माध्यम से त्योहारों को संस्कृति और आजीविका, परम्परा और उद्यम तथा पर्यटकों और स्थानीय समुदायों के बीच जुड़ाव का माध्यम बनाया जा सकता है। इस तरह, ग्रामीण त्योहार केवल उत्सव मनाने तक सीमित न रहकर विकास, रोज़गार और समृद्धि को बढ़ावा देने में लंबे समय तक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। ❑